

DPN 6000

Title : हारावली कोष HĀRĀVALĪ KOṢA

Run. No. 6691

Cat. No.

Micro. No.

Subject कोष Lexicome

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 38.5 x 6.5 Folios 22 Lines (in a page) 4

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator पुरुषोत्तम देव
Purusottam Deva

Scribe / donor हरिवंश शर्मा / पशुपतिमान पामाय

Date: NS / SS / VS / KS 788

Ruler / place Harivansa Sharma / Pasupati-
man Pama

Script : New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः शिवाय ॥ भुज्यापति विमुक्त स्वच्छ निर्मल कवली विनिरुत मनु पूर्वत यस्तु
गङ्गा प्रवाहः । शिव सि सरस भास्वन्मालती दाय लक्ष्मी लययाति हिम गोतः ॥

सोऽस्तु नः साध्य सिध्यै ॥

समाप्ति वाक्य / Colophon

इति महा शाब्दिके श्री गुरुषोत्तम देव विरचिते हाणवली कोषः संपूर्णः ॥

दृष्ट्वा लिखितोऽलिपिं गुरुहं हाणवलीयां हरे वंश शर्मा कुशाग्र धीभिर्गुणैः
द्विकैः सा विचार्य बुद्ध्या क्रियतां विद्युद्ग ॥ ॥

सर्वत्र ६८८ कार्त्तिक कृष्ण द्वितीयाया श्री हरे वंश शर्मा लिखितेयं मुद्रितम् ॥
शुभमस्तु ॥ ॥

दश पाठ इत्यु / A specimen text :-

शब्दार्णवं उत्पालिनी संसारणवि इत्यादि कोषा वाचस्पति व्याडि विक्रमादित्यं निर्मिताः ॥
~~आदाय सारमेतेषां मन्येषां च विशेषतः~~ । इति काव्य मलीकं स्यान्मात्सर्यमालिनात्मनां । शब्दार्णवि
आदाय सारमेतेषां मन्येषां च विशेषतः । हाणवली निर्मितेयं मया द्वादश वत्सरे ।
उपास्य सर्वेश सुवर्ण वेशं भूत्वा तिथिः श्री धृति ^{सिंह} वाचां । हाणवली द्वादश मासै द्विनिर्मितेयं
गुरुषोत्तमेन ॥ नाना काव्य गुण नाटक कथा कोषोत्तिहास स्मृति ज्योतिः शास्त्र गजाश्व मानव
भिषकोषान् प्रयत्नादियं दृष्ट्वा न्यानि च शाब्दिकैः सह कृता हाणवली यत्नतः
कर्तव्येन न सहायः सुमनसः शब्दार्ण लिङ्गेष्वतः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ

ॐ

CMS

5

10

15

20

25

॥ ५॥ गोपनीय ॥ ३३ ॥

ॐ नमः ॥ निवाय ॥ रुजगपति विमलसुक्कनिर्भोकवली विलसितमनूकवचनयस्य गङ्गापवारः ॥ निवसि सनसरा सुमालती दामल कलिययति हिमलोचनः ॥
सांस्त्रुनः साधुसिद्धिः ॥ कल्पवसानसमयस्त्रुतेथ कवीनां दिहान्कर्तुमिच्छियस्य उक्तिपुसन्नायस्याः ॥ यसादयनमाधुवचिपुतिष्ठामेथेति कामचिनमामिसवस्वतीतां ॥
निर्मलसनाः ॥ सुकृतिनः ॥ रवलूथ विविच्यैकलुगुलस्य कलमश्वतंसय निधिमनो नमन यत्र दायवादनं कविदेव विवला रुविसः ॥ ३३ ॥ मुक्तामया
कृपाधिगगत नलामलसद्गुणी ॥ साक्षी सगारुजुक नृमसोपिथव हावावली विनवितापूषा कभन ॥ किं नृस निस्र धियामरिधा
नकाषाः ॥ किं नृप सिद्ध विषयश्रवण राजः ॥ गणधीषू वाद यत्र भारुरुला सुकषा हावावली न विदधाति विदधुमानं ॥ एकैतमव गलयति यत्र विदधुन वावा विद

युमनिमज्जति यस्यालोकः ॥ गणधीषूयः ॥ पवनमण्डिक इग्नेमासू द्रव्येधेनद गतसंगय मुक्तिनलि ॥ आद्याधनादतः ॥ लोके वरुणात लिनाकतः ॥ गद्याः ॥ पादद्वि
भाधद्याः ॥ युगनकार्थतस्तः ॥ ॥ विषमनयनः ॥ दूचनुभो लिर्गमली वृषरु गतिगेल्लोव विहाल्लवषादः ॥ हिपूवदहनः ॥ लिसूखरवद्विदिहिलु
पियतमलितिकल्लुः ॥ रगन्धकल्लाषकल्लुः ॥ जतधामा बहुष्यालिः ॥ ४५ ॥ गिगधुगदगजः ॥ गदीकोः ॥ मुरुवकाः ॥ यथाः ॥ ३३ ॥ अन्यधनाः ॥ ३३ ॥ अमृताहनल
साक्षीनागनकः ॥ खगन्धो विनतयः ॥ पदिसिंहः ॥ गल्लमली रुविवाहनः ॥ ॥ खगपतः ॥ वियन्मलिरानवा रुविरुः ॥ गननिदाद्यकवावयः ॥ किनगमालि

॥ नमः ॥ यथाः ॥ ३३ ॥

^{सूर्यस्य १७}
 विभावन हलयां दिनमलिस्त्रलिंघदिनपुली ॥ श्रुतश्रुवानूज ॥ ४५ ॥ अमलं श्रुतया सुत ॥ ४६ ॥ निःसफा त्रिनीलवसन ॥ ४७ ॥ यात निः ॥ ४८ ॥ कूललावन ॥ ४९ ॥ दाकाय नीयति
 बलक गुपकजन्मकुङ्गीगवा विमलिद्वनविपलू ॥ ५० ॥ राजा समूदनवतीत गभानू दोमा ॥ ५१ ॥ विन्दु ॥ ५२ ॥ लतिलका रुविना हि ली ॥ ५३ ॥ गारु मूषि सी क्रुमार्त्त ॥ ५४ ॥ पूष
 नीकायवानसि ॥ ५५ ॥ यानाधना लोह सूर्याजय जीजनक ॥ ५६ ॥ त ॥ ५७ ॥ महामृ ॥ ५८ ॥ पुक विदी घमावृत्त विलाल ॥ ५९ ॥ जलकां क सिन्धु ॥ ६० ॥ द्विपायि शूर्यगुनिकु मिसा
 मजा महामद ॥ ६१ ॥ धवकि पप्रिपीलव ॥ ६२ ॥ दधीक ॥ ६३ ॥ विषधन ॥ ६४ ॥ ग्यसना गनीहि ॥ ६५ ॥ श्रीरु लभधन विषायू धदी द्यष्ट ॥ ६६ ॥ क्रुहीनस द्विगसेनी समकाल दी ॥ ६७ ॥ लो क

^{सूर्यस्य १८}
 पुक गुलिलानव सना विषास्य ॥ ६८ ॥ गषम कनमादा ययुति ॥ ६९ ॥ कंक भलयत ॥ ७० ॥ अन्धान्य पशुत ॥ ७१ ॥ लो क ॥ ७२ ॥ पुतिमाल ति सामता ॥ ७३ ॥ नरु श्यावा यूपा नू धनदांग
 गन ध्वज ॥ ७४ ॥ श्याम धूमा जलम सि ॥ ७५ ॥ रवत माल ॥ ७६ ॥ पया धन ॥ ७७ ॥ रुषा इस्व काले य दले कानाम्बना दिक ॥ ७८ ॥ आ कृष्ण ॥ ७९ ॥ पृ णु पार्श्व ॥ ८० ॥ पु लुलिक चतत ॥ ८१ ॥ सुनते कल
 मूलव यच्च दली यरावया ॥ ८२ ॥ दम्य लो लिर्त मन्द ममर्त गदि द्रु ॥ ८३ ॥ यदी यग रु दध र्या मनावा कृष्ण सिद्ध ॥ ८४ ॥ उपया विनक दिव्य भारु दते द्वि द्रु ॥ ८५ ॥ ध ॥
 ॥ नक निर्गल्य यकि ॥ ८६ ॥ कृता गुरु कर्तव्य ॥ ८७ ॥ नूय गत द्वि द्रु ॥ ८८ ॥ वा देव पु न्मूप गु कि ॥ ८९ ॥ वृद्ध ॥ ९० ॥ क मित्या द्रु विन्दु नमनी विल ॥ ९१ ॥ जीष्वा हास र्वग करु वात दून

मादज ४॥ स्वर्गनृपकलाल विद्रुं विगभवर्क विनीयका यावनका वसूकी ठामूरवमय ४॥ जायमान विषाणा लंकटा लामहिषी निरलो ॥ अर्द्धा रुक्म नगस्थानी
कदरुङ्ग उदाहृत ४॥ जलराज नमकूठी कावावी मूर्ध्वक र्यनी ॥ उष्णवात लमूर्ध्वक ठवका नैवपूठाज ॥ काशान्न वंशवीनाही युद्धिव भूर्ज लाविका ॥ जलकूची जलाष्टी ॥
लीनलाकी पूष्क विष्णु ॥ आसना समय ४क विद्रुं पृथिवी ॥ नलक लादित्य मूकानु वद न्यङ्गा विनी दिनी ॥ अङ्गा विनी पला गाना कलिका निग्नेश रवत ॥ ग
भावी वक नृ लु व सिद्धी वक वालुकी ॥ कूरु त्या विरवा न्नेषी यार्थक ४ सन्धिजीवक ४ अथ वंश रवत ४ कूरु माल ४ कूज मूल ४ थाक ४ क निद्रुं सु र्गना गक सव

वृक्षक वचन वचनीक वचनी लपि वंश ॥ अरावा लुपि विद्या गं मुन गवक्र वशे क ॥ यमिनी यदुर्ग ॥ गार्थी तल व अरन वर विद्रु ४॥ स्यादा वमन क ४ था लु ४ कटः
काल ४ यतद्रु ४ वालायवी तनु विद्रु ४ य अरव मूरु ४ ॥ ग्रामी लवा धर्क नृ र्थ नामध वी निगद्यत ॥ नानी लाम मुलीन र्थ वृषा रुल्ली सक विद्रु ४॥ मानी वा याज क गका
गजरु सी महाक ४॥ यदल कान मूरु वृक्ष ॥ अङ्गी कनक मूरु वृक्ष ४॥ प्रति वक्ष मिनि निधु वर निथा जर्न वा द्रु वथ विद्रु ४॥ जा मूरु कटि कूटनी वकूटनी ४ कन्द ना
कव ४ उदर गंग लु कूप मूरु पर्वत स्या हि धी यत ॥ वासिना ४ धनू का र्व व व ग व क विनी मता ॥ वक्रा गुरु ४ क उपगु ४ सिंह विकान वा डिनी ॥ समूड ग निग्ने विनी गला

॥ ८॥

निरीषा विघनागनः॥ वनाह काली कथितः॥ शृंगारः॥ मुग्धादिके॥ वक्रवल्गुः॥ सिरसाभोरसि गुणु वनालिका॥ वनतिका॥ मियांगीषा॥ निविटः॥ पथसुन्दरः॥
 ॥ मधुपूषा॥ मधुकथं॥ गुणपूषा॥ मधुदूषा॥ वृक्षपूषा॥ पाटुषा॥ लम्बाहविडः॥ शृङ्गलिपियः॥ उलाह विस्मयः॥ नययुटिका॥ वर्मसम्भवा॥ कृष्णा॥ लुकः॥ पूषारुलः॥ यै
 नवासं॥ वयकः॥ शेषः॥ कासमदः॥ मुक्तापस्कः॥ वयः॥ चि॥ उकादः॥ माली॥ याची॥ नभाहा॥ लिनवहा॥ लिका॥ कल्यावर्कः॥ पातनागः॥ पातशः॥ जनमित्यपि॥ शृंगः
 लिका॥ वडिम्बः॥ उमत्रा॥ किडवा॥ पित्त॥ स्कथरुलः॥ सुतः॥ शृङ्गा॥ विकलः॥ पूषादः॥ गुडदः॥ मधुः॥ लसि॥ यशः॥ महरासः॥ नाजानुकी॥ महराकः॥ मूलकाः॥

८

सिद्धकः॥ कूडवः॥ मिकः॥ गुडः॥ सवघा॥ विन्दुपक्कः॥ कूडपः॥ गाववा॥ नदी॥ कूडा॥ माला॥ लिका॥ याची॥ नामलकः॥ वक्रवल्गुः॥ वदनामलकः॥ तथः॥ चिष्टः॥ सोनरुमकाः॥ शृङ्गी
 खर्गुमालयः॥ विडः॥ मृगनाशिकः॥ मृगमदा॥ गन्धः॥ लम्बाहविडः॥ चि॥ सिताः॥ उतः॥ नूसात्रः॥ शृङ्गवर्कः॥ नसकः॥ सर्वः॥ कालयैवः॥ गकः॥ उकाः॥ कालीयः॥ वनचन्दनः॥ नृणां॥ सावामृ॥ सुखला॥ नम्राव
 मालमली॥ शवः॥ उडु॥ सिनः॥ पत्राः॥ शृङ्गा॥ मथा॥ नाजपटलः॥ कः॥ कूडः॥ मीचीनका॥ वयः॥ घुसु॥ लीकः॥ सुमात्मकः॥ अरुवकः॥ उलकः॥ गन्धः॥ कावारः॥ लोवर्कः॥ मृ॥ तः॥ उमत्रा॥ का
 रुला॥ पूषा॥ वृक्षपूषा॥ लिद्यालिका॥ किंशुकः॥ कनकः॥ पटुला॥ कावः॥ कः॥ मूरी॥ नवः॥ अमः॥ गुणः॥ शृङ्गुलः॥ वदः॥ माना॥ गन्धः॥ वरुसः॥ मियुटी॥ रुलः॥ शृङ्गा॥ वलू॥ सतीनः॥ लकः॥

मृत्पुत्री किनाटीवत थाम्पुपुत्री ॥ रवतमालोमरुदाहो धूमो रुम् ४ लिखिधुज ४ ॥ गमखान गवमित्याह्म यदस्य लुपूनाकन ॥ आह्म जलकनक धुजलजं सुविका
 मूर्ख ॥ उपजिद्विकापदिकावटिनुदहिकादिनी ॥ गुन्वमो शुम्भनवर्क भुकास्यतामुकविद्र ४ ॥ दूर्नामादीर्घकाषीस्यात्यक्कुकि ४ लितालिका ॥ आकाशमूलीक
 नर्णकृमिकाजलवल्कली ॥ गमूकाजलडिमध्यामवल्गुन ४ पद्ममधुक ४ ॥ आगकनर्गलुकातासुलीषाकीउर्नमर् ॥ यच्चि ४ गयवतीधो ४ श्वरवीनक ॥
 नीधुग ॥ शखागयाकिर्गहर्लियनार्कविद्रुध ४ ॥ अर्धवर्ककर्क ४ ठमाह्म नहु लितावली ॥ सिद्धसलिलं गुग्गुलुममवनिभार्मरुधादकं शुर्क ॥ नः

ग्राहक निर्गुक्तकरदकदिगमनाग ॥ कवपुर्जलकीजाव्यास्य कीकनयलि का ॥ गवालीपुनवनापुलापुनिकीकिता ॥ पश्चरुगारुयासंयय ३ ॥
 स्वर्द्धपूषिग ४ ॥ यश्चवकासूकुजसिस्थाद्वलुरुयालक ४ ॥ निमलस्कीयआवर्त ४ सिद्धिदवमलि ४ स्मृता ४ ॥ तथावक सिवाहस्यलीककउदाक ४ ॥ वमे ४
 पलागयगालीलीधपु पिमाविका ॥ अवसकक ४ धनक ४ धर्ममदनासव ४ ॥ कर्ष ४ ॥ दिगतागममरधुस्कार्ममनामर् ॥ तथावकु ४ गतागममरधु ४ ॥ गमूर्खवि
 ३ ॥ यश्चागामर्लसामतद्रुपतिवर्धस्मृती ॥ गालायासाद निखववल्गुगालीकि कीकिता ॥ सफना गुपुमगाया ४ कीर्धयूषं उअर्ग ॥ अर्धधुकावधि ४ वृ

—८॥॥

विद्रु॥ लाल॥ ४ कल्ल॥ ४ रघा॥ ४ धी॥ ४ म॥ ४ दू॥ ४ क॥ ४ धु॥ ४ भ॥ ४ व॥ ४ ४ क॥ ४ ड॥ ४ क॥ ४ पा॥ ४ नि॥ ४ रा॥ ४ यो॥ ४ स्या॥ ४ दी॥ ४ यो॥ ल॥ ४ क॥ ४ रु॥ ४ न॥ ४ स॥ ४ त॥ ४ ४ मृ॥ ४ ल॥ ४ भा॥ ४ कां॥ वि॥ ४ ग॥ ४ ल॥ ४ न॥ ४ ल॥ ४ न॥ ४ क॥ ४ मृ॥ ४ ल॥ ४ म॥ ४ ल॥ ४ ४ ४ रि॥ ४ का॥
नि॥ ४ दू॥ ४ नृ॥ ४ यो॥ ४ नृ॥ ४ यो॥ ४ म॥ ४ लु॥ ४ ४ पि॥ ४ का॥ ४ त॥ ४ थ॥ ४ न॥ ४ स॥ ४ ४ वा॥ ४ न॥ ४ क॥ ४ दु॥ ४ कि॥ ४ ति॥ ४ क॥ ४ ४ स्या॥ ४ दा॥ ४ मृ॥ ४ लो॥ ४ म॥ ४ ल॥ ४ ४ ल॥ ४ न॥ ४ दू॥ ४ पि॥ ४ मृ॥ ४ लो॥ ४ र्क॥ ४ स्या॥ ४ द्रा॥ ४ य॥ ४ न॥ ४ नि॥ ४ वी॥ ४ न॥ ४ थ॥ ४ ४ म॥ ४ न॥ ४ य॥ ४ नृ॥ ४ म॥ ४ न॥ ४ वी॥ ४ स्या॥
नि॥ ४ र्क॥ ४ न॥ ४ म॥ ४ ल॥ ४ क॥ ४ ४ की॥ ४ म॥ ४ लि॥ ४ का॥ ४ पा॥ ४ रु॥ ४ त॥ ४ क॥ ४ म॥ ४ दु॥ ४ क॥ ४ ल॥ ४ क॥ ४ न॥ ४ व॥ ४ ४ वि॥ ४ दा॥ ४ न॥ ४ क॥ ४ क॥ ४ च॥ ४ पा॥ ४ न॥ ४ स्या॥ ४ दु॥ ४ लो॥ ४ नि॥ ४ दू॥ ४ नि॥ ४ कां॥ ४ म॥ ४ त॥ ४ वा॥ ४ न॥ ४ ल॥ ४ म॥ ४ र॥ ४ मि॥ ४ य॥ ४ क॥ ४ स्या॥ ४ द्वा॥ ४ न॥ ४ वि॥ ४ ज॥ ४ य॥ ४ क॥ ४ उ॥ ४ र॥
४ ४ य॥ ४ रा॥ ४ न॥ ४ म॥ ४ म॥ ४ म॥ ४ म॥ ४ व॥ ४ ४ लि॥ ४ ले॥ ४ य॥ ४ का॥ ४ मि॥ ४ नी॥ ४ स॥ ४ दा॥ ४ वा॥ ४ का॥ ४ द॥ ४ न॥ ४ म॥ ४ क॥ ४ मृ॥ ४ ली॥ ४ स्या॥ ४ मृ॥ ४ ल॥ ४ का॥ ४ नि॥ ४ का॥ ४ उ॥ ४ ल॥ ४ कां॥ ४ ग॥ ४ नि॥ ४ क॥ ४ स॥ ४ म॥ ४ सि॥ ४ द्वा॥ ४ स्या॥ ४ भ॥ ४ वि॥ ४ कां॥ ४ म॥ ४ त॥ ४ ४ व॥

किं वा घृष्टी मता ॥ मूत्रं घृष्टं तु लिप्तं नदीं लक्ष्मिं तापनार्थं ॥ गजरुक्ता मदास्त्रात ॥ ४८ ॥ गजमलुभं ॥ यतिभ्यो नालवद्ध ॥ ४९ ॥ कल्याणं लुक ॥ ५० ॥ कल्याणं ॥ ५१ ॥
४॥ वीची जललता ॥ ५२ ॥ लाला ॥ ५३ ॥ विद्रु ॥ ५४ ॥ जम्बाला ॥ ५५ ॥ जलकन्य ॥ ५६ ॥ द्रुति ॥ ५७ ॥ लुपु ॥ ५८ ॥ विनाह ॥ ५९ ॥ विवह ॥ ६० ॥ गलुषा ॥ ६१ ॥ मूत्रपूत्र ॥ ६२ ॥ काष्ठमल ॥ ६३ ॥ गवयनिक ॥ ६४ ॥ सुवर्ण ॥ ६५ ॥
स ॥ ६६ ॥ पर्वविधि ॥ ६७ ॥ पत्रं ॥ ६८ ॥ विष्काला ॥ ६९ ॥ यगकार ॥ ७० ॥ लाला ॥ ७१ ॥ गह्वर्न ॥ ७२ ॥ गली ॥ ७३ ॥ गवि ॥ ७४ ॥ यविधा ॥ ७५ ॥ द्वात्र ॥ ७६ ॥ कलु ॥ ७७ ॥ कर्क ॥ ७८ ॥ वृ ॥ ७९ ॥ सुख ॥ ८० ॥ लु ॥ ८१ ॥ सार्व ॥ ८२ ॥ कन ॥ ८३ ॥ सन्न ॥ ८४ ॥ द्या ॥ ८५ ॥ मपि ॥ ८६ ॥ र्द ॥ ८७ ॥ क ॥ ८८ ॥
८९ ॥ कर्क ॥ ९० ॥ विद्रु ॥ ९१ ॥ वन्दि ॥ ९२ ॥ कन ॥ ९३ ॥ मनी ॥ ९४ ॥ माद्रु ॥ ९५ ॥ सन्दी ॥ ९६ ॥ लघु ॥ ९७ ॥ रव ॥ ९८ ॥ द्वि ॥ ९९ ॥ का ॥ १०० ॥ द्य ॥ १०१ ॥ वाज ॥ १०२ ॥ ४८ ॥ ग ॥ १०३ ॥ क ॥ १०४ ॥ ग ॥ १०५ ॥ ग ॥ १०६ ॥ ग ॥ १०७ ॥ ग ॥ १०८ ॥ ग ॥ १०९ ॥ ग ॥ ११० ॥ ग ॥ १११ ॥ ग ॥ ११२ ॥ ग ॥ ११३ ॥ ग ॥ ११४ ॥ ग ॥ ११५ ॥ ग ॥ ११६ ॥ ग ॥ ११७ ॥ ग ॥ ११८ ॥ ग ॥ ११९ ॥ ग ॥ १२० ॥ ग ॥ १२१ ॥ ग ॥ १२२ ॥ ग ॥ १२३ ॥ ग ॥ १२४ ॥ ग ॥ १२५ ॥ ग ॥ १२६ ॥ ग ॥ १२७ ॥ ग ॥ १२८ ॥ ग ॥ १२९ ॥ ग ॥ १३० ॥ ग ॥ १३१ ॥ ग ॥ १३२ ॥ ग ॥ १३३ ॥ ग ॥ १३४ ॥ ग ॥ १३५ ॥ ग ॥ १३६ ॥ ग ॥ १३७ ॥ ग ॥ १३८ ॥ ग ॥ १३९ ॥ ग ॥ १४० ॥ ग ॥ १४१ ॥ ग ॥ १४२ ॥ ग ॥ १४३ ॥ ग ॥ १४४ ॥ ग ॥ १४५ ॥ ग ॥ १४६ ॥ ग ॥ १४७ ॥ ग ॥ १४८ ॥ ग ॥ १४९ ॥ ग ॥ १५० ॥ ग ॥ १५१ ॥ ग ॥ १५२ ॥ ग ॥ १५३ ॥ ग ॥ १५४ ॥ ग ॥ १५५ ॥ ग ॥ १५६ ॥ ग ॥ १५७ ॥ ग ॥ १५८ ॥ ग ॥ १५९ ॥ ग ॥ १६० ॥ ग ॥ १६१ ॥ ग ॥ १६२ ॥ ग ॥ १६३ ॥ ग ॥ १६४ ॥ ग ॥ १६५ ॥ ग ॥ १६६ ॥ ग ॥ १६७ ॥ ग ॥ १६८ ॥ ग ॥ १६९ ॥ ग ॥ १७० ॥ ग ॥ १७१ ॥ ग ॥ १७२ ॥ ग ॥ १७३ ॥ ग ॥ १७४ ॥ ग ॥ १७५ ॥ ग ॥ १७६ ॥ ग ॥ १७७ ॥ ग ॥ १७८ ॥ ग ॥ १७९ ॥ ग ॥ १८० ॥ ग ॥ १८१ ॥ ग ॥ १८२ ॥ ग ॥ १८३ ॥ ग ॥ १८४ ॥ ग ॥ १८५ ॥ ग ॥ १८६ ॥ ग ॥ १८७ ॥ ग ॥ १८८ ॥ ग ॥ १८९ ॥ ग ॥ १९० ॥ ग ॥ १९१ ॥ ग ॥ १९२ ॥ ग ॥ १९३ ॥ ग ॥ १९४ ॥ ग ॥ १९५ ॥ ग ॥ १९६ ॥ ग ॥ १९७ ॥ ग ॥ १९८ ॥ ग ॥ १९९ ॥ ग ॥ २०० ॥ ग ॥ २०१ ॥ ग ॥ २०२ ॥ ग ॥ २०३ ॥ ग ॥ २०४ ॥ ग ॥ २०५ ॥ ग ॥ २०६ ॥ ग ॥ २०७ ॥ ग ॥ २०८ ॥ ग ॥ २०९ ॥ ग ॥ २१० ॥ ग ॥ २११ ॥ ग ॥ २१२ ॥ ग ॥ २१३ ॥ ग ॥ २१४ ॥ ग ॥ २१५ ॥ ग ॥ २१६ ॥ ग ॥ २१७ ॥ ग ॥ २१८ ॥ ग ॥ २१९ ॥ ग ॥ २२० ॥ ग ॥ २२१ ॥ ग ॥ २२२ ॥ ग ॥ २२३ ॥ ग ॥ २२४ ॥ ग ॥ २२५ ॥ ग ॥ २२६ ॥ ग ॥ २२७ ॥ ग ॥ २२८ ॥ ग ॥ २२९ ॥ ग ॥ २३० ॥ ग ॥ २३१ ॥ ग ॥ २३२ ॥ ग ॥ २३३ ॥ ग ॥ २३४ ॥ ग ॥ २३५ ॥ ग ॥ २३६ ॥ ग ॥ २३७ ॥ ग ॥ २३८ ॥ ग ॥ २३९ ॥ ग ॥ २४० ॥ ग ॥ २४१ ॥ ग ॥ २४२ ॥ ग ॥ २४३ ॥ ग ॥ २४४ ॥ ग ॥ २४५ ॥ ग ॥ २४६ ॥ ग ॥ २४७ ॥ ग ॥ २४८ ॥ ग ॥ २४९ ॥ ग ॥ २५० ॥ ग ॥ २५१ ॥ ग ॥ २५२ ॥ ग ॥ २५३ ॥ ग ॥ २५४ ॥ ग ॥ २५५ ॥ ग ॥ २५६ ॥ ग ॥ २५७ ॥ ग ॥ २५८ ॥ ग ॥ २५९ ॥ ग ॥ २६० ॥ ग ॥ २६१ ॥ ग ॥ २६२ ॥ ग ॥ २६३ ॥ ग ॥ २६४ ॥ ग ॥ २६५ ॥ ग ॥ २६६ ॥ ग ॥ २६७ ॥ ग ॥ २६८ ॥ ग ॥ २६९ ॥ ग ॥ २७० ॥ ग ॥ २७१ ॥ ग ॥ २७२ ॥ ग ॥ २७३ ॥ ग ॥ २७४ ॥ ग ॥ २७५ ॥ ग ॥ २७६ ॥ ग ॥ २७७ ॥ ग ॥ २७८ ॥ ग ॥ २७९ ॥ ग ॥ २८० ॥ ग ॥ २८१ ॥ ग ॥ २८२ ॥ ग ॥ २८३ ॥ ग ॥ २८४ ॥ ग ॥ २८५ ॥ ग ॥ २८६ ॥ ग ॥ २८७ ॥ ग ॥ २८८ ॥ ग ॥ २८९ ॥ ग ॥ २९० ॥ ग ॥ २९१ ॥ ग ॥ २९२ ॥ ग ॥ २९३ ॥ ग ॥ २९४ ॥ ग ॥ २९५ ॥ ग ॥ २९६ ॥ ग ॥ २९७ ॥ ग ॥ २९८ ॥ ग ॥ २९९ ॥ ग ॥ ३०० ॥ ग ॥ ३०१ ॥ ग ॥ ३०२ ॥ ग ॥ ३०३ ॥ ग ॥ ३०४ ॥ ग ॥ ३०५ ॥ ग ॥ ३०६ ॥ ग ॥ ३०७ ॥ ग ॥ ३०८ ॥ ग ॥ ३०९ ॥ ग ॥ ३१० ॥ ग ॥ ३११ ॥ ग ॥ ३१२ ॥ ग ॥ ३१३ ॥ ग ॥ ३१४ ॥ ग ॥ ३१५ ॥ ग ॥ ३१६ ॥ ग ॥ ३१७ ॥ ग ॥ ३१८ ॥ ग ॥ ३१९ ॥ ग ॥ ३२० ॥ ग ॥ ३२१ ॥ ग ॥ ३२२ ॥ ग ॥ ३२३ ॥ ग ॥ ३२४ ॥ ग ॥ ३२५ ॥ ग ॥ ३२६ ॥ ग ॥ ३२७ ॥ ग ॥ ३२८ ॥ ग ॥ ३२९ ॥ ग ॥ ३३० ॥ ग ॥ ३३१ ॥ ग ॥ ३३२ ॥ ग ॥ ३३

[illegible]

[illegible][illegible]

पाठके ॥ खड्गधनुरूलैरुन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥ हाले उन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥ हाले उन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥ हाले उन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥
 लम्बिकादन्निवधूषूवकठमना ॥ यद्वा ८ लेवल्लेनोसायानि जलकुकुके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥
 मर्कटजालके ॥ यद्वा ८ लेवल्लेनोसायानि जलकुकुके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥
 पूनागोशुनानामयष्टि ८ कविसन्निविकावित् ॥ पूत्येष्टि ८ कविसन्निविकावित् ॥ पूत्येष्टि ८ कविसन्निविकावित् ॥

76

के पिप्यलकैतथासीवनसुगुके ॥ पाठलिके ॥ इत्यममर्क ॥ काण्ड्याकालदलनि ॥ डिक्कायावृषदंशके ॥ लासं कामगुलंरूपे ॥
 थराजने ॥ कायापथवद्वृषायाविगालीधनिर्मत ॥ माल्लेनोसायानि जलकुकुके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥
 यूगमकृष्ट्याजलकुकुके ॥ माल्लेनोसायानि जलकुकुके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥
 नी ॥ ककलासकिगुकाएल्लेनोसायानि जलकुकुके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥ किञ्चिदन्नेयनेरुलैल यन्त्रके ॥

लभावी गुहूची मधूयष्टिषू॥ जले विल्व ४ ककू ८ कप ५३॥ जलवत्तम॥ शालकीना गवर ४ वकनी ४ किष्कू पर्वलि॥ कलाल वकुवा रुम दलुन ४॥
नयलु ४॥ दिगुथ वनया गाय दलुय गी विद्रुष ४॥ उरु दासी सग वव दासे वक ०० निस्म १४॥ जले गुल्मी जलावर्त ककू ४ जलवत्तम॥ कादला व
नूवी लसूथ निनाला व्यनि विद्रु ४॥ धा २६ कावुलिका यवि जाद कध निविषात॥ विद्याद्रक लिका गद्य मूत्क लुवी विवाचक॥ दृष्टि विष सूत्र कवधि
जिद्र ४ पत्रिकी किन ४॥ मला दना विदगुप्ती नरुकी सूत्र वोलिकी॥ लामा वली भयमाला कब टाषूत्र कालिका॥ मं दूर लमधूत्र कू ३३ जलव २३ जला ३३

१२

न॥ अनूकभ्या तपस्वी स्यात्ताप संवधु तवत॥ लल कोक पिग्गानो निष्कू ४ कथिने १५॥ कू दभा १६ लमूष निम्वुर्मी कल्पतरु ५ चित॥ ०० कोकनी ४
कावा २३ खल विद्रु घुल किल ४॥ निर्म ०० मूत्र कषि १६ रुक ४ वउ डि वकया ४॥ धना ८० याग क वाहुल ३३ ४ स्यात्प १६ ककया ४॥ निर्मू ८० कप्यन मूत्र्य १६ किलो मू
सल १६ लुलु विवद्रु कू २६ लो २६ लिगु ३ क वकया ४॥ तलुक ४ २६ ३३ नल ६० निल्या स्वना कथ॥ यादा वधि ४६ लु ४॥ ॥ गऊ पिना गमातर ३३ विजाव सि
लक पिब॥ निष्कान ४० मूत्र्य वान पिमू ३६ लु ३६ पिब॥ विद्रु पिमू गाव ४० पूर्व द ३६ पिद्रु ३६॥ स्वत्र पि कलु ३३ रवात ४० नवत्तमत्तम पिब॥

मं ३०२

हाए वली कोस

श्रीगणेशाय नमः॥

२२